रोज़ा पार्क्स

रोज़ा पार्क्स अमेरिकन इतिहास की एक प्रसिद्ध व्यक्ति है. मोंट्गोमेरी, अल्बामा में 1 दिसम्बर 1955 के दिन वह काम समाप्त करने के बाद घर जाने के लिये एक बस में बैठी. बस में उसने एक गोरे व्यक्ति को अपनी सीट देने से इंकार कर दिया. उसके इंकार से एक आंदोलन शुरू हो गया. अचानक मिसेज़ पार्क्स नागरिक अधिकारों के लिए किये जा रहे संघर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना का केंद्र बन गई.

यह कहानी उस महिला और उसके साहस और दृढ़ निश्चय की कहानी है.

रोज़ा पार्क्स
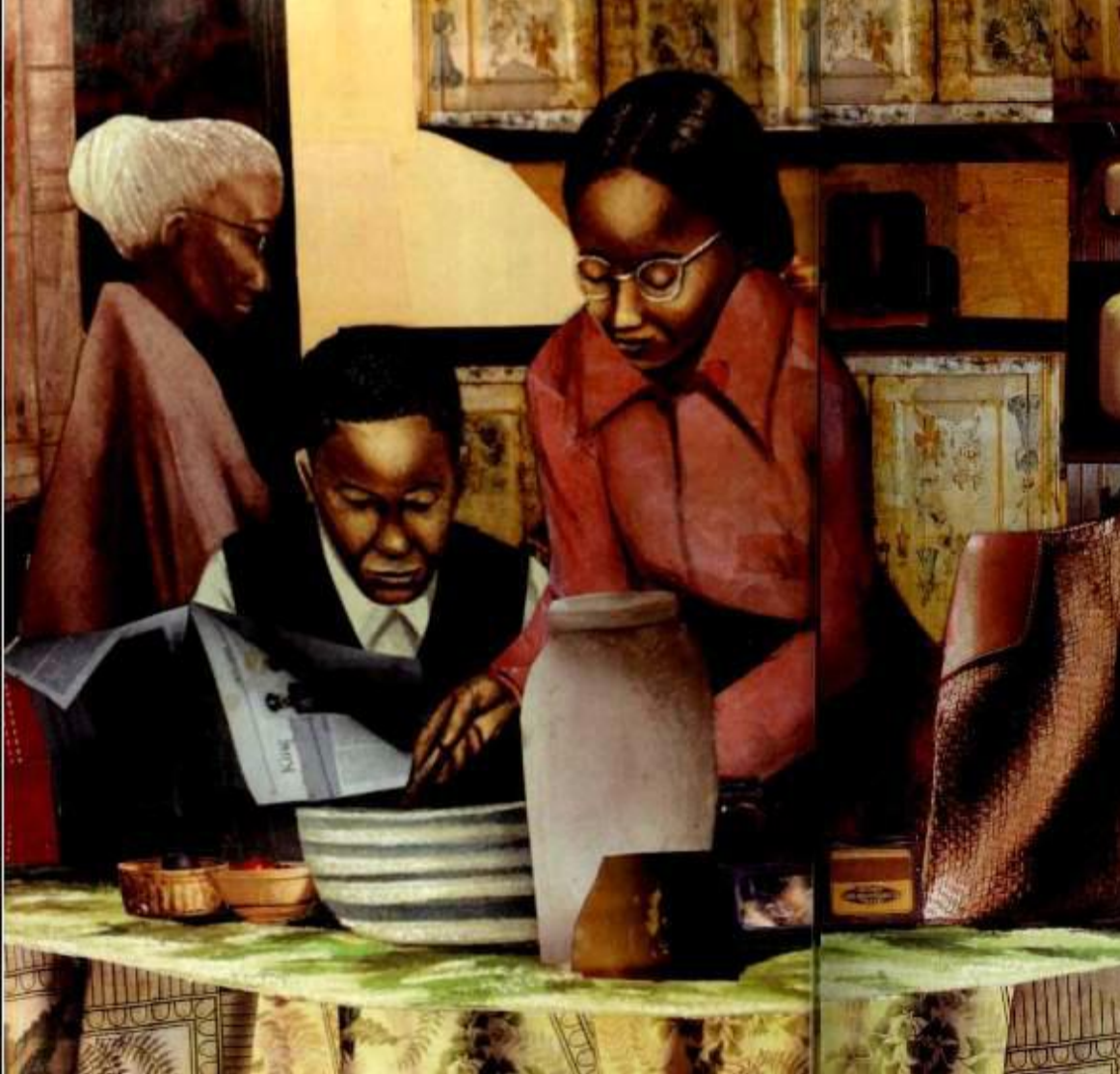
मिसेज़ पार्क्स के लिए
यह एक अच्छा दिन था.
माँ का बुखार ठीक हो गया था
और सुबह ब्रेकफास्ट करने के
लिये वह स्वयं उठ कर मेज़
पर आ गई थी. उसका पति,
रेमंड पार्क्स, देश के सबसे
अच्छे हज्जामों में से एक था;
उसे वायु सेना के बेस पर
अतिरिक्त काम मिल गया था.
और दिसम्बर का पहला दिन
तो सदा ही विशेष होता था
क्योंकि आने वाली क्रिसमस
की खुशियों को महसूस किया
जा सकता था.

हर कोई जानता था कि ‘फेरबदल’ विभाग में शीघ्र ही सब खूब व्यस्त हो जायेंगे. हर वर्ष अन्य दरजिनों के साथ मिसेज़ पार्क्स खूब हंसती और कहती कि “उत्तरी ध्रुव के उन बौनों के पास हमारे लिए कुछ भी नहीं है.”

मोंट्गोमेरी की महिलायें, चाहे युवा हों या वृद्ध, अपनी उन सुंदर पोशाकों के लेकर आतीं थीं जिन में फेरबदल की आवश्यकता होती थी या जिन पर कढ़ाई-बुनाई करके उन्हें त्यौहार के लिए और भी सुंदर बनाया जा सकता था ताकि उनको पहन कर महिलायें अधिक आकर्षक लगें.

रोज़ा पार्क्स सबसे अच्छी दरजिन थीं. उसके हाथ में सुई और धागा उतनी तेज़ी से चलते जितनी तेज़ी से रम्प्लस्टिल्टस्किन करघे पर सोने के तार से बुनाई करता था. अन्य दरजिनें रोज़ा का यह कह कर छेड़ती थीं कि वह तो जादू करती है. रोज़ा हंस देती और कहती, “जादू नहीं है, बस एकाग्र मन से काम करती हूँ.” कई बार काम पूरा करने के लिये वह दुपहर का खाना भी छोड़ देती थी.

इस गुरुवार को उन्होंने समय से पहले ही काम पूरा कर लिया था. “तुम घर क्यों नहीं चली जाती,” उसके निरीक्षक ने कहा. “मैं जानता हूँ कि तुम्हारी माँ बीमार हैं और तुम्हें उनकी देखभाल करनी होगी.”

निरीक्षक जानता था कि रोज़ा काम समाप्त होने तक रुकी रहेगी. लेकिन अभी पहली दिसम्बर ही थी. अधिक मेहनत करने की ज़रूरत नहीं थी. रोज़ा को यह बात अच्छी लगी. आज वह जल्दी घर जा सकती थी. और चूँकि उसका पति रेमंड देर तक काम करने वाला था, उसके लिए उसका मन-पसंद खाना बना कर वह उसे आश्चर्यचकित कर देगी.

“कल सुबह मिलेंगे,” रोज़ा ने हाथ हिला कर अलविदा कहा और बस-स्टॉप की ओर चल दी. उसने जेब में हाथ डाल कर खुले पैसे निकाले ताकि बस में उसे छुट्टा न माँगना पड़े. बस के अंदर जब डिब्बे में किराये के पैसे वह डाल रही थी तब उसके होंठो पर यह सोच कर मुस्कान उभर आई कि घर पहुँच कर वह बढ़िया खाना बनाने वाली थी. और उन दिनों की बुरी प्रथा के अनुसार किराया देकर वह बस से उतर गयी और बस में प्रवेश करने के लिये पिछले दरवाज़े की ओर आ गयी.

उसने देखा कि बस को जो भाग अश्वेत लोगों के लिए आरक्षित था वह पूरा भरा हुआ था. लेकिन जिस भाग में अश्वेत और गोरे दोनों एक साथ बैठ सकते थे वहां कुछ सीटें खाली थीं.

बीच के रास्ते के बाईं ओर दो सीटें खाली थीं और दाईं तरफ एक व्यक्ति खिड़की के पास बैठा था. रोज़ा ने उस व्यक्ति के पास बैठने का सोचा. उसे उस व्यक्ति का नाम याद न आ रहा था पर उसका चेहरा उसे जाना-पहचाना लगा. उसका बेटा, जिम्मी, एनएएसीपी यूथ कौंसिल में अकसर आया करता था. जैसे ही बस चली उन दोनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया.

रोज़ा ने अपना सिलाई का बैग और पर्स अपने घुटनों के पास रख लिया ताकि जिम्मी के पिता को कोई दिक्कत न हो. यह सोचते हुए कि आदमी अकसर अधिक जगह लेते हैं उसने अपना सामान अपने बिलकुल पास खिसका लिया. बस कई जगह रुकी और उसके बगल वाली सीटों पर भी दो अश्वेत लोग आकर बैठ गये. अपनी सीट पर बैठी वह सोच रही थी कि उसका दिन कितना अच्छा बीता था और घर पहुँच कर पति के लिए वह बढ़िया खाना बनाने वाली थी.
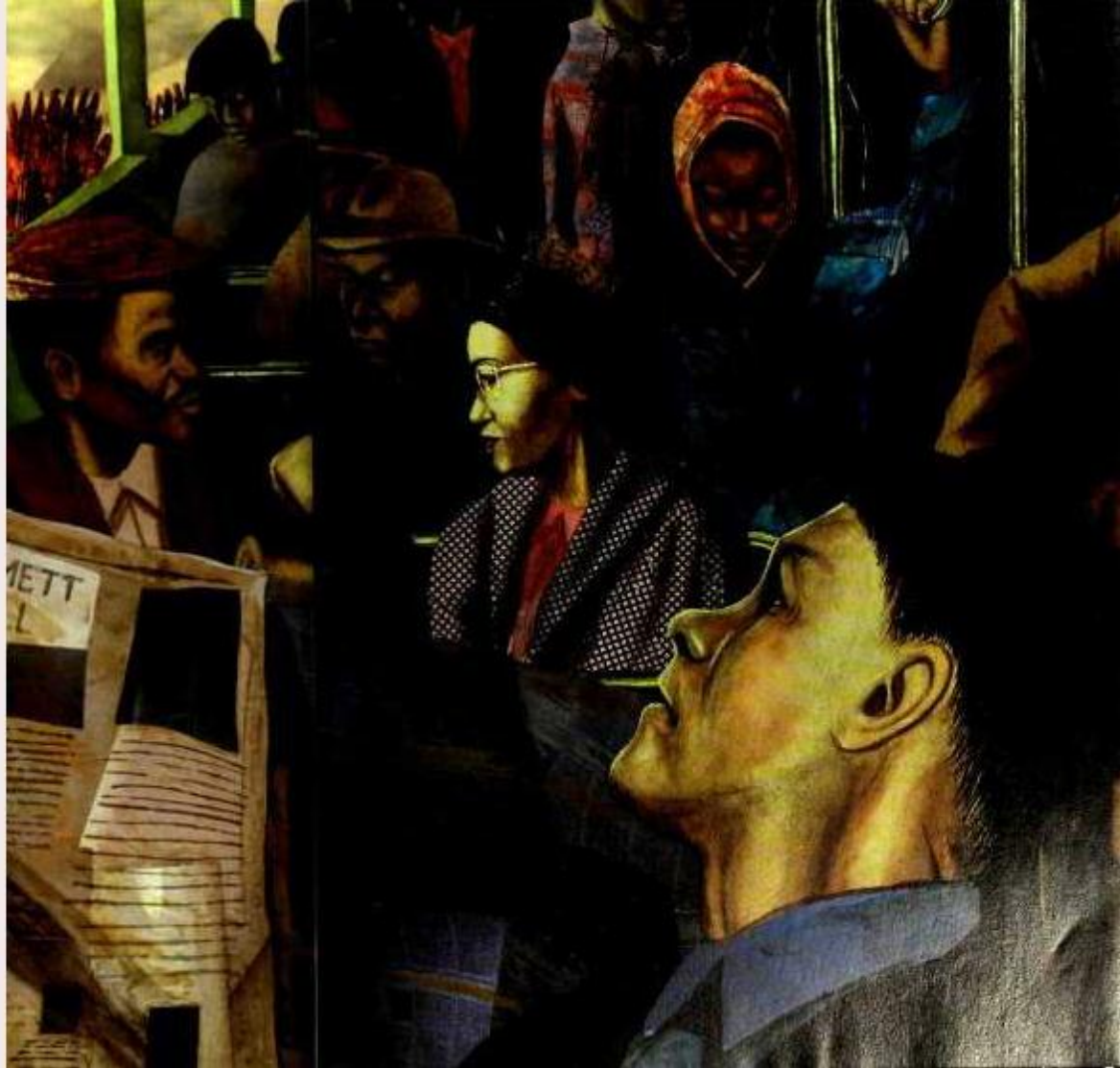
“मैंने कहा वह सीटें खाली कर दो,” बस ड्राईवर चिल्लाया. मिसेज़ पार्क्स ने आश्चर्य से सामने देखा. बीच वाले रास्ते के दूसरी ओर बैठे दोनों आदमी अपने सीटों से उठ कर अश्वेतों के लिए आरक्षित भाग में जा रहे थे. वहां पहले ही भीड़ थी. जिम्मी के पिता ने बुदबुदा कर जैसे अपने से ही कहा, “आज किसी झगड़े में फंसने का मन नहीं है. मैं जा रहा हूँ.”

मिसेज़ पार्क्स ने खड़े हो कर उसे निकलने की जगह दी, बस ड्राईवर, जेम्स ब्लेक, की ओर देखा और फिर अपनी सीट पर बैठ गयी.

“अपने लिये मुसीबत न खड़ी करो!” ब्लेक चिल्लाया.

“हमें ही क्यों सताते हो?” मिसेज़ पार्क्स ने शांत, स्थिर भाव से कहा.

“मैं पुलिस बुला लूंगा!” ब्लेक ने धमकी दी.

“जो करना चाहते हो करो,” मिसेज़ पार्क्स ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया. वह बिलकुल भी भयभीत न थी. वह इस अन्याय के सामने झुकने वाली न थी.

कुछ गोरे लोग ऊंची आवाज़ में कह रहे थे, “उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिये,” और “उसे बस से नीचे उतार दो.” यह देख कर कि स्थिति बिगड़ सकती थी, कुछ अश्वेत लोग बस से उतर गये. कुछ बस में ही रहे, वह आपस में कह रहे थे, “उस भाग में सब बैठ सकते हैं. वहां बैठना उसका अधिकार है.”

मिसेज़ पार्क्स बैठी रही.

पुलिस की प्रतीक्षा करते हुए मिसेज़ पार्क्स ने उन साहसी पुरुषों और महिलाओं, लड़कों और लड़कियों के विषय में सोचा जिन्होंने नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया था. उसने मन-ही-मन 'ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ़ एजुकेशन' मामले में सुप्रीम कोर्ट के 1954 में दिए गये फैसले को दोहराया, जिसके अनुसार 'पृथकता की प्रथा' स्वाभाविक रूप से ही अन्यायपूर्ण थी.

उसने एक आह भरी जब उसे अहसास हुआ कि वह थकी हुई थी. वह काम के कारण न थकी थी, लेकिन वह गोरे लोगों के व्यवहार से थक गयी थी. रास्ते पर चलते हुए गोरे लोगों को राह देते थक गयी थीं, पृथक लंच काउंटर्स पर अलग खाना खाकर थक गयी थी, अलग स्कूलों में पढ़ते थक गयी थी.

वह 'अश्वेत' प्रवेशों से, 'अश्वेत' बालकोनियों से, 'अश्वेत' नलों से और 'अश्वेत' टैक्सियों से थक गयी थी. किसी जगह सर्वप्रथम पहुँचने पर भी अंत तक प्रतीक्षा करके थक गयी थी. वह 'पृथकता' से थक गयी थी और 'बराबर नहीं' सुन-सुन कर तो बिलकुल थक गयी थी.
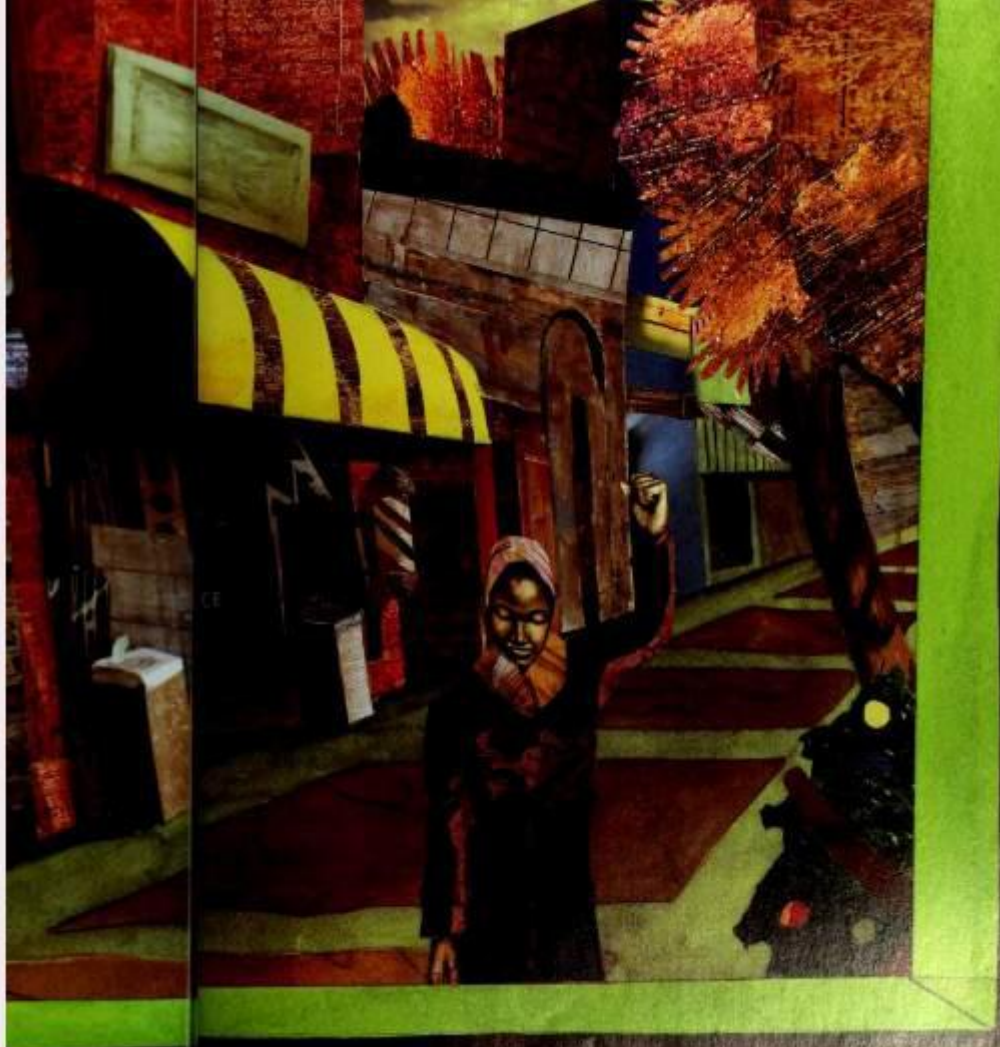
उसने अपनी माँ और नानी के विषय में सोचा. वह जानती थी कि वह दोनों चाहेंगी कि वह दृढ़ रहे. उसने इस चुनौती को खोजा नहीं था लेकिन इसका सामना करने के लिए तैयार थी.

जब पुलिसमैन ने झुककर उससे पूछा, “आंटी, क्या आप यहाँ से हटेंगी?” तब वर्षों से पीड़ित अश्वेत लोगों की सारी शक्ति उसके भीतर प्रकट हो गई. रोज़ा ने कहा, “नहीं”.
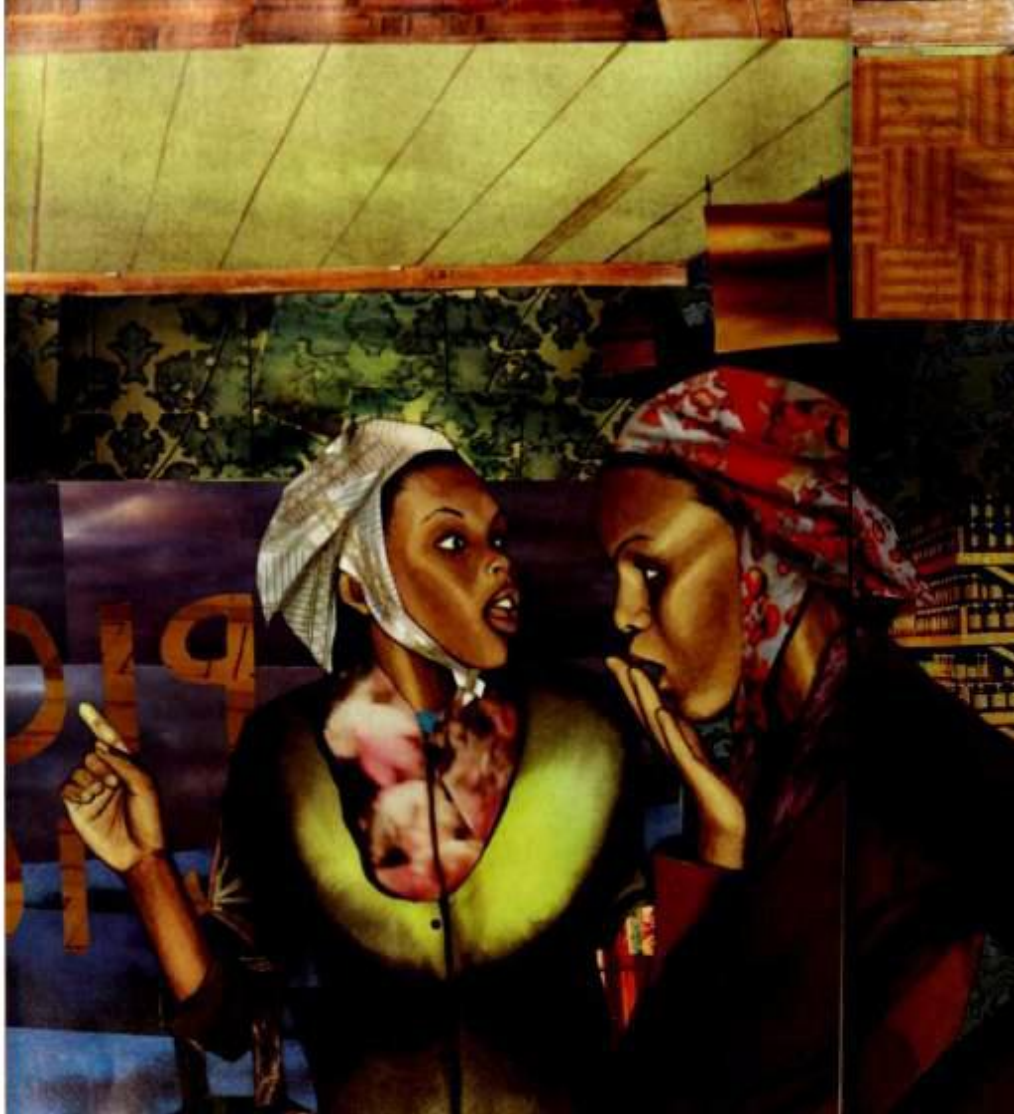
जो. एन. रोबिंसन ने जब गिरफ्तारी के विषय में सुना तब वह पिग्गली-विग्गली में थीं. वह मक्रोनी और पनीर लेने के लिए वहां गई थी. जब भी वह डिनर में मछली बनाती थी तब वह मक्रोनी और पनीर भी साथ में परोसती थी. जैसे ही पैसे देने के लिये वह कतार में लगी, महिलाओं की पोलिटिकल कौंसिल की एक साथी सदस्या ने उसे सूचना दी.

"मिसेज़ पार्क्स गिरफ्तार हो गयी!" उसने उत्तेजना से कहा. फिर उसने चोरी-छिपे अपने आसपास देखा. "सन्देश भेज दो कि सब मेरे ऑफिस में आज रात दस बजे आकर मुझ से मिलें."

मिसेज़ रोबिंसन डॉक्टर रोबिंसन भी थी और 'अश्वेत' कॉलेज, अल्बामा स्टेट में एक प्रोफेसर थी. वह महिलाओं की पोलिटिकल कौंसिल की नई अध्यक्ष चुनी गयी थी. वह झटपट घर आई, डिनर परोसा, किचन साफ़ की और बच्चों को सुला दिया. अपने पति को उसने अलविदा कहा और तेज़ी से कॉलेज की ओर चल दी. सब के वहां इकट्ठे होने तक अँधेरा हो चुका था.

पच्चीस औरतों ने एक-दूसरे के हाथ थाम कर इस आशा से प्रार्थना की कि वह सही कार्य कर रही थीं. आखिर, वह बिना अनुमति के अल्बामा स्टेट कॉलेज के कागज़, प्रिंटर, स्टैंसिल वगैरह इस्तेमाल करने वाली थीं. अगर वह कॉलेज के भीतर पकड़ी गयीं तो उन्हें बिना अधिकार के कॉलेज में प्रवेश करने के लिये गिरफ्तार किया जा सकता था. लेकिन वह एक क्रूर कानून के विरुद्ध संघर्ष कर रही थीं. रोज़ा पार्क्स के साहस से उत्साहित हो कर उन्होंने निश्चय किया कि वह भी भय और आत्म-घृणा का सामना साहस से करेंगी.

महिलाओं ने अलग-अलग कार्य करने के लिए तुरंत कुछ ग्रुप बना लिये. सबसे कठिन काम था स्टैंसिल बनाना क्योंकि मशीन की हर की (key) को ज़ोर से दबाना पड़ता था ताकि अक्षर साफ़, पढ़ने योग्य हो. अगर एक भी गलती होती तो नया स्टैंसिल बनाना पड़ता था. सारा काम बहुत एकाग्रता से करना पड़ रहा था.

पोस्टरों पर लिखा था: कोई बस में यात्रा न करेगा; मिसेज़ पार्क्स का साथ दें. बसों से दूर रहें, सोमवार को पैदल ही यात्रा करें. महिलाओं ने मोंट्गोमेरी के सब अश्वेत लोगों के लिए पर्याप्त पोस्टर बनाये. अगले दिन इन पोस्टरों को पढ़ते समय लोगों को उस प्रसन्नता का ध्यान आया जो उन्होंने तब महसूस की थी जब सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया था कि 'पृथकता की प्रथा' असमानता का प्रतीक थी. अश्वेत लोगों को लगा था कि उच्चतम न्यायलय के इस निर्णय के बाद उनके साथ बुरा व्यवहार न किया जाएगा. लेकिन ऐसा हुआ नहीं.

इस निर्णय के तुरंत बाद मनी, मिसिसिप्पी में एक चौदह वर्ष के लड़के, एमेट टिल, को एक भीड़ ने पीट-पीट कर मारा डाला था. उसके अंतिम संस्कार में एक लाख से भी अधिक लोगों ने भाग ले कर उसकी माँ के साथ शोक प्रकट किया. माँ ने उसकी शव-पेटिका को खुला छोड़ दिया था और कहा था, "मैं चाहती हूँ कि दुनिया देखे कि उन्होंने मेरे बेटे के साथ कैसा क्रूर व्यवहार किया." उसके हत्यारों के बरी होने के कुछ सप्ताह बाद ही रोज़ा पार्क्स ने एक साहसिक कदम उठाया था. लोग उसका साथ देने को तैयार थे.

जन-सभा में भारी संख्या में लोग उपस्थित थे. इस सभा में महिलाओं की पोलिटिकल कौंसिल, एनएएसीपी और सब चर्चों के सदस्य थे. उन्हें आवश्यकता थी किसी ऐसे व्यक्ति की जो अन्याय के प्रति उनकी भावनाओं को व्यक्त कर सके. सब सहमत थे कि रेवरेंड मार्टिन लूथर किंग जूनियर सबसे योग्य व्यक्ति थे. “हम बसों से दूर रहेंगे,” डॉक्टर किंग ने घोषणा की. “हम तब तक पैदल चलते रहेंगे जब तक कि न्याय और सच्चाई की जीत नहीं हो जाती.”

और लोग पैदल चलने लगे. वह वर्षा में पैदल चले. वह तपती धूप में चले. वह बहुत सवेरे पैदल चले. वह देर रात पैदल चले. वह क्रिसमस के दिन पैदल चले और ईस्टर पर पैदल चले. वह चार जुलाई को पैदल चले, वह श्रमिक दिवस पर पैदल चले. वह थैंक्सगिविंग वाले दिन पैदल चले और फिर अगली क्रिसमस भी लगभग आ ही गयी.

और लोग तब भी पैदल चलते रहे.
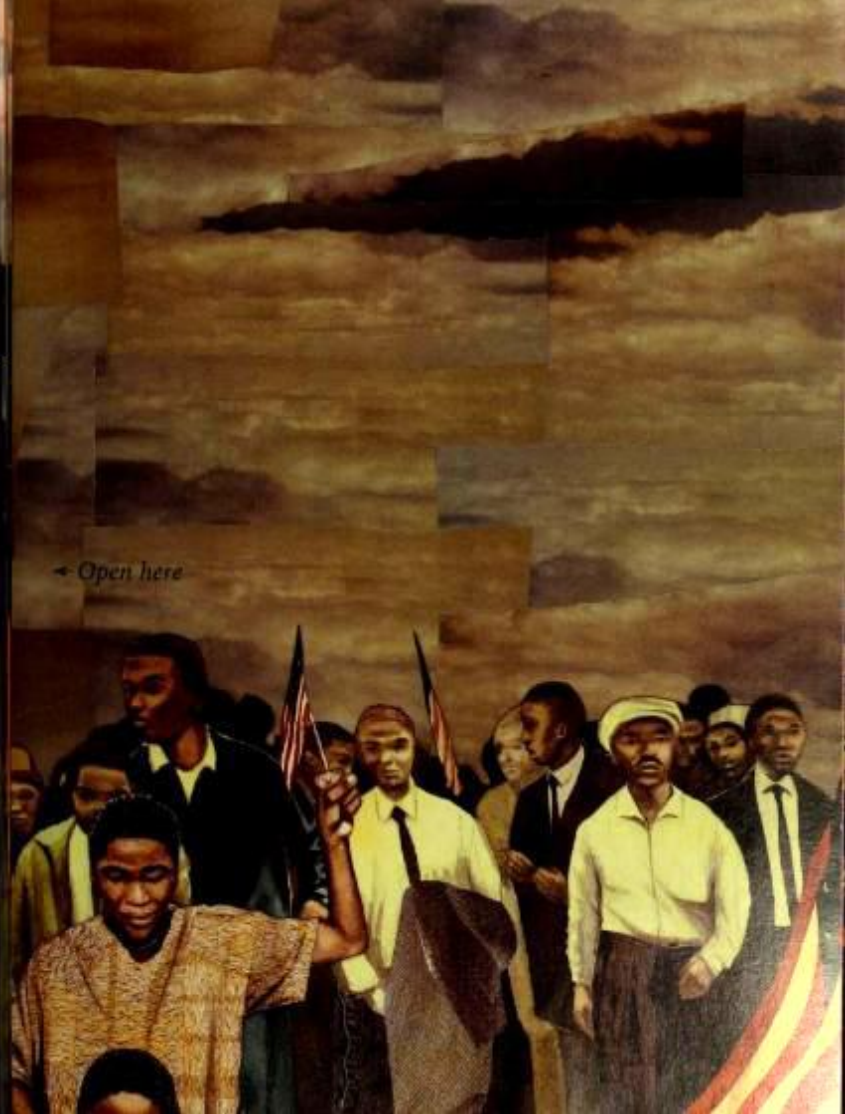
रोज़ा पार्क्स की सच्चाई, गरिमा और साहस ने उसकी एक 'नहीं' को परिवर्तन की एक लहर में बदल दिया था.
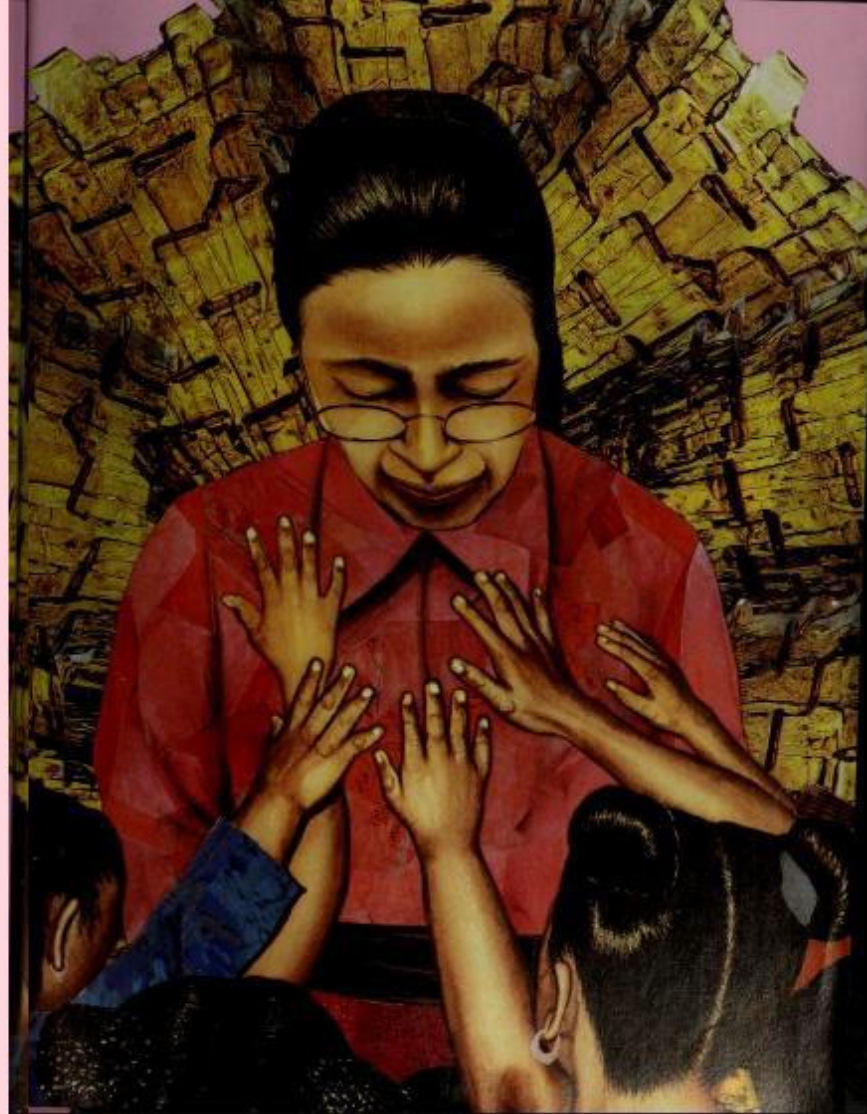
अमेरिका के ब्लैक मूवमेंट

(अश्वेत आंदोलन)

की प्रमुख नायिका

रोज़ा पार्क्स

की प्रेरक जीवनी